

## पाठ 36 – अध्याय 35 और 36 (पुस्तक का अंत)

इस सप्ताह हम गिनती की पुस्तक के अपने अध्ययन को समाप्त करने जा रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आप यहाँ मिले इतिहास, कानूनी मिसाल और परमेश्वर के सिद्धांतों की स्थापना से आश्चर्यचकित हुए होंगे, और यह नाम के अनुसार एक नीरस लेखा रिकॉर्ड नहीं है।

पिछले सप्ताह हमने गिनती 35 शुरू की थी; और उस अध्याय में वादा किए गए देश में लेवी के गोत्र की विरासत की स्थापना के बारे में चर्चा की गई थी; और यह लेवियों को 48 शहरों का आवंटन था। ये शहर इस्राएल के 12 गोत्रों की भूमि जोतों में फैले होने थे, उनके स्थान का चयन 12 गोत्रों के नेताओं द्वारा किया जाना था। उनमें से छह शहरों को पवित्र नगरों के रूप में नामित किया जाएगा, जिनमें से 3 वादा किए गए देश के बाहर यर्डन नदी के पूर्व में रूबेन, गाद और मनश्शे के 1/2 गोत्र के क्षेत्रों में स्थित होंगे।

आइये गिनती अध्याय 35:13 अन्त को पुन पढ़ें।

### गिनती अध्याय 35:13 को पुनः पढ़ें— अंत तक

यहाँ एक अवधारणा है जिस पर चर्चा की आवश्यकता है और वह अवधारणा है अभयारण्य। एक और शब्द जिसे अभयारण्य के लिए प्रतिस्थापित किया जा सकता है वह है शरण। शरण की यह धारणा कहाँ से आई, यह विचार कि एक ऐसी जगह है जहाँ कोई व्यक्ति जो सरकार से डरता है (चाहे वह सरकार आदिवासी नेता, न्यायाधीश, राजा या किसी और के रूप में हो) जा सकता है और गिरफ्तारी और सजा से सुरक्षित रह सकता है? जिस सजा से शरण चाहने वाला आमतौर पर भागता है वह मृत्युदंड है।

सबसे पहले (जैसा कि आपको अब तक अंदाजा हो गया होगा) शरण (या शरणस्थल) की अवधारणा का आविष्कार इब्रानी लोगों ने नहीं किया था, यह कई मध्य पूर्वी संस्कृतियों की न्याय प्रणालियों का एक लंबे समय से स्थापित हिस्सा था। फिर भी, अपने शुद्धतम अर्थ में मूल आधार ईश्वरीय है।

दूसरा, उस युग के लगभग सभी ज्ञात मध्य पूर्वी समाजों के लिए यह आदर्श होने के परिणामस्वरूप, यह किसी न किसी रूप में इब्रानियों के बीच मौजूद था। विभिन्न संस्कृतियों ने इसे अलग-अलग तरीकों से लागू किया। आम तौर पर इसमें पुजारियों के पास भागना और/या मंदिर के अंदर खड़ा होना शामिल था जो उस राष्ट्र के लिए वर्तमान में महत्वपूर्ण या सर्वोच्च किसी भी देवता को समर्पित था। हमें निर्गमन की पुस्तक में इब्रानियों द्वारा अभयारण्य के स्थान के रूप

में स्वीकार किए जाने का सबसे पहला रिकॉर्ड मिलता है और अभयारण्य कहाँ स्थित है, यह थोड़ा आश्चर्यजनक है।

निर्गमन 21:12 "जो कोई किसी मनुष्य को इस रीति से मारे कि वह मर जाए, वह भी निश्चय मार डाला जाए।

"परन्तु यदि उसने उसकी घात में न बैठा हो, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में कर दिया हो, तो मैं उसके भाग जाने के लिये एक स्थान ठहराऊँगा। 14 परन्तु यदि कोई अपने पड़ोसी पर ऐसा अभिमान करे कि उसे धूर्तता से मार डालना चाहे, तो उसे मेरी वेदी के पास से भी दूर ले जाना, कि वह मार डाला जाए।

दूसरे शब्दों में, जैसा कि उन प्राचीन संस्कृतियों में बहुत आम था, यह उनके देवता के लिए होमबलि की वेदी थी जो उनका मूल अभयारण्य स्थान था। इसलिए, मूसा को पूर्ण व्यवस्था दिए जाने से पहले, एक इस्राएली व्यक्ति के लिए वेदी की ओर दौड़ना और (जैसा कि हम बाइबल की बाद की पुस्तकों में पाते हैं) वास्तव में वेदी के सींगों को पकड़ना एक संकेत के रूप में था कि वह अभयारण्य की तलाश कर रहा था। जब तक वह उस वेदी से चिपका रहता था, उसे छुआ नहीं जा सकता था।

यहाँ गिनती 35 में यहोवा ने शरणस्थान के सिद्धान्त के पालन के लिए जो तरीका निर्धारित किया है, उसका अर्थ यह है कि परमेश्वर इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है और इसके वैध होने के लिए उसके लोगों को शरणस्थान की उसकी प्रक्रियाओं का पालन करना होगा।

अब चूँकि वादा किए गए देश में प्रवेश करने से पहले कोई पवित्र नगर नहीं था, तो उस समय से पहले क्या इस्तेमाल किया जाता था? खैर, यह अकल्पनीय है कि एक सामान्य इस्राएली को तम्बू परिसर के अंदर पीतल की वेदी को छूने की अनुमति थी और निश्चित रूप से वह पवित्र तम्बू के अंदर नहीं जा सकता था। संभवतः लेवियों के शिविर ने ही उस उद्देश्य को पूरा किया; हालाँकि चूँकि तोरह हमें नहीं बताता है, यह केवल मेरी अटकलें हैं। हालाँकि, कुछ ने अभयारण्य के स्थान के रूप में कार्य किया, क्योंकि उन दिनों के सांस्कृतिक मानदंडों के भीतर शरण का स्थान न होना संभव नहीं था।

फिर भी जैसे-जैसे सदियाँ बीतती जाती हैं, हम पाते हैं कि इस्राएलियों ने कभी भी उस व्यवस्था को पूरी तरह से लागू नहीं किया जो प्रभु ने उन्हें दी थी। वहाँ शरण नगर थे, लेकिन कुछ युगों में या तो उनका उपयोग नहीं किया जाता था या शरण नगरों के अलावा शरण के अन्य

साधन भी थे। हम दाऊद और सुलैमान के युग में पढ़ते हैं कि स्पष्ट रूप से शरण के लिए वेदी पर आने और उसके सींगों को पकड़ने का विचार अभी भी इस्राएल के बीच मौजूद था।

1 राजा 1:47 "और राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को आशीर्वाद देने आए, और कहने लगे, 'तेरा परमेश्वर सुलैमान का नाम तेरे नाम से भी बढ़ा करे, और उसका राज्य तेरे राज्य से भी बढ़ा करे। और राजा ने अपने बिस्तर पर सिर झुकाया। 48 "राजा ने यह भी कहा है, धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने आज मेरे सिंहासन पर मेरे देखते हुए एक को बैठाया है।" 49 तब अदोनियाह के सभी अतिथि डर गए, और वे उठकर अपने-अपने मार्ग पर चले गए। 50 और अदोनियाह सुलैमान से डर गया, और उठकर गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। 51 और जब सुलैमान को यह बताया गया, "देख, अदोनियाह राजा सुलैमान से डर गया है, क्योंकि उसने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है, 'राजा सुलैमान आज मुझसे शपथ खाए कि वह अपने सेवक को तलवार से नहीं मारेगा।"

मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि दाऊद और सुलैमान के शासनकाल में पुरोहिताई कितनी कम हो गई होगी, और कैसे, भले ही हम इस व्यक्ति दाऊद को परमेश्वर के हृदय के करीब मानते हैं, और सुलैमान को एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति मानते हैं, वे परिपूर्णता से कोसों दूर थे। किसी भी पुजारी को कभी भी किसी सामान्य इस्राएली को, अपराधी को तो छोड़िए, वेदी को छूकर अपवित्र करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी, लेकिन जाहिर तौर पर राजाओं में इस प्रकरण का मतलब है कि यह प्रथा दाऊद और पुरोहिताई दोनों को कम से कम कुछ समय के लिए ज्ञात और स्वीकृत थी।

फिर सवाल यह उठता है कि वेदी के बारे में ऐसा क्या था जिसके कारण मूर्तिपूजकों ने इसे पवित्र स्थान के रूप में इस्तेमाल किया और फिर कभी-कभी इस्राएल के इतिहास में इब्रानियों ने भी ऐसा ही किया? ऐसा इसलिए है क्योंकि जो भी पवित्र वस्तु को छूता है वह खुद पवित्र हो जाता है। यह एक मार्गदर्शक बाइबिल सिद्धांत है। हमने इसे कोरह और 250 पुरुषों द्वारा परमेश्वर के सामने लाए गए अग्निपात्रों के साथ देखा (लेकिन क्योंकि ये पुरुष और उनके अग्निपात्र अनधिकृत थे, सभी नष्ट हो गए), वे परमेश्वर के इतने करीब होने के कारण पवित्र हो गए थे, किसी भी पवित्र वस्तु को छूने की बात तो दूर रही। यह लेवी के नियम के अंतर्गत आता है कि पवित्रता और अशुद्धता दोनों ही व्यक्ति से व्यक्ति, वस्तु से वस्तु या यहाँ तक कि व्यक्ति से वस्तु और वस्तु से व्यक्ति में संचारित हो सकती है। इस प्रकार, अग्निपात्रों (जिनमें पवित्रता समाहित थी) को वेदी

के लिए ढक्कन में पीटा गया। उन अग्निपात्रों में जो कोयले और धूप की राख थी, उन्हें शिविर के बाहर ले जाया गया और नष्ट कर दिया गया।

परमेश्वर का अध्यादेश मानव हाथों को वेदी या किसी भी पवित्र उपकरण को छूने की अनुमति नहीं देता है, एक अपवाद यह है कि पुजारी, कुछ अच्छी तरह से वर्णित उद्देश्यों (जैसे वस्तुओं को ले जाना) के लिए कभी-कभी इन वस्तुओं को छू सकते हैं। लेकिन फिर भी, क्योंकि एक इंसान ने उन्हें छुआ है, इसलिए अशुद्धता का एक उपाय इसमें चला जाता है और, यह योम किप्पुर, प्रायश्चित के दिन के लिए प्राथमिक कारणों में से एक है, कि उच्च पुजारी प्रायश्चित के खून को तम्बू की भौतिक चीजों पर छिड़क सकता है और इसलिए उन्हें शुद्ध कर सकता है। अन्यथा, मनुष्यों के साथ निकटता से अशुद्धता का निर्माण अंततः अभयारण्य और इसकी अनुष्ठान वस्तुओं को इतना अशुद्ध बना देगा कि परमेश्वर अब वहाँ नहीं रह सकते।

अतः इस्राएलियों के लिए पवित्र नगरों का उपयोग केवल तभी हो सकता था जब वे प्रतिज्ञात भूमि के अन्दर आ जाते; किन्तु परमेश्वर के बहुत से अध्यादेशों की तरह वे शरण के सम्बन्ध में परमेश्वर के नियमों को अनदेखा करने और उन्हें संशोधित करने में सफल रहे, और इस प्रकार शरण प्राप्त करने के तरीके में सदियों के दौरान परिवर्तन होता रहा।

अब इस बात को समझने के बुनियादी महत्व के अलावा कि इस्राएल में पवित्र स्थान का सिद्धांत कैसे संचालित होता है, मैंने इस मामले पर विस्तार से बताया क्योंकि यह समझना महत्वपूर्ण है कि सिर्फ इसलिए कि हम बाइबल में कुछ घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं (ऐतिहासिक तथ्य के रूप में) इसका मतलब यह नहीं है कि जो हुआ या जो कुछ बाइबल के किसी पात्र ने कहा वह अपने आप ही प्रभु के सामने सही या धार्मिक था। मैंने आपको दाऊद और सुलेमान का उदाहरण दिया था, जिन्होंने आम इस्राएलियों को पवित्र वेदी के सींगों को पकड़ने की प्रथा की अनुमति दी (इस तरह इसे अपवित्र किया)। हमने कुछ हफ्ते पहले प्रतिज्ञाओं और यिप्तह के मामले को कवर किया था, जिसने प्रभु से जल्दबाजी में एक प्रतिज्ञा की थी, जिसके परिणामस्वरूप उसने अपनी बेटी की बलि दे दी (यिप्तह ने जो किया वह धार्मिक होने का कोई पहलू नहीं था)।

इसलिए हमें बाइबल पढ़ते समय ईश्वर द्वारा निर्धारित दिव्य नियमों और अध्यादेशों और सिद्धांतों की पूर्ण पूर्णता और बाइबल के महान पुरुषों और महिलाओं द्वारा इन नियमों के बारे में सोचने या उन्हें लागू करने के अपूर्ण तरीके के बीच अंतर करने के लिए बहुत सावधान रहना चाहिए। हम इस मानसिकता में पड़ जाते हैं कि क्योंकि बाइबल में एक विशेष व्यक्ति (जैसे अब्राहम, या दाऊद, या संत पौलुस) ने कुछ खास तरीके से किया था, इसलिए यह अपने आप में ईश्वरीय

था। इस्राएल के ईश्वर के अनुयायियों के रूप में यह हमारा कर्तव्य (यह हमारा काम है) है कि हम तोरह और सभी शास्त्रों का अध्ययन करें ताकि उनके चरित्र और उनके सिद्धांतों को अच्छी तरह से समझ सकें ताकि हम बाइबल, पुराने या नए नियम में जो पढ़ते हैं, उसका पूरी तरह से गलत अर्थ न निकालें।

गिनती 35:16 से आरम्भ करते हुए हमें मानव-हत्या, हत्या, तथा क्या किसी मनुष्य की हत्या को हत्या, मानव-हत्या या कुछ और माना जाए, से सम्बन्धित नियम प्राप्त होते हैं।

जैसा कि हमने लैव्यव्यवस्था में पढ़ा था, इरादा इस निर्णय को लेने की कुंजी है, ठीक उसी तरह जैसे इरादा सभी पापों की गंभीरता का निर्धारण करने के लिए यह महत्वपूर्ण है और यह स्पष्ट करने के लिए कि प्रभु हत्या बनाम आकस्मिक हत्या बनाम मानव जीवन का न्यायोचित हनन क्या मानते हैं, हमें प्रत्येक के उदाहरणों की एक श्रृंखला मिलती है।

पहला उदाहरण उस उपकरण के इर्द-गिर्द घूमता है जिसका इस्तेमाल मौत का कारण बना और सिद्धांत यह है कि अगर ऐसा उपकरण नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से बनाया गया था (भाला, धनुष और तीर, गदा, आदि), तो यह एक हथियार है और अगर इसका इस्तेमाल हत्या में किया गया था तो इस कृत्य को आम तौर पर हत्या के रूप में देखा जाना चाहिए। अगर कोई उपकरण हथियार के रूप में नहीं बनाया गया था, लेकिन अगर गलत तरीके से इस्तेमाल किया गया तो निश्चित रूप से एक हथियार हो सकता है (कुल्हाड़ी जैसी कोई चीज) तो यह अभी भी हत्या है (और परमेश्वर स्पष्ट रूप से और बिना किसी माफी के कहते हैं कि हत्या करने वाले व्यक्ति को मृत्युदंड दिया जाना चाहिए)। इसके अलावा, यह व्यक्ति सजा से बच नहीं सकता है और न ही उसे शरण के शहर में रहने और संरक्षित होने की कृपा की अनुमति है।

हत्यारे को मारने के बारे में इस दृष्टिकोण का कारण दुनिया भर में आलोचना का विषय रहा है। हर जगह यह कहा जा रहा है कि हत्या करना गलत है, लेकिन हत्यारे को मौत की सजा देना भी हत्या है। या फिर एक और बात यह है किसी और इंसान की जान लेने से क्या फायदा है, क्योंकि इससे मरे हुए लोग वापस नहीं आएँगे? या यह पुनर्वास नहीं बल्कि प्रतिशोध है। निश्चित रूप से इससे मारे गए व्यक्ति की जान वापस नहीं आएगी और न ही यह अपराधी को पुनर्वास प्रदान करता है, लेकिन बाइबल में यह मुद्दा नहीं है। दुख की बात है कि चर्च का एक बड़ा हिस्सा ही है जिसने हत्या पर परमेश्वर के निर्देश के विरुद्ध विद्रोह करने का आरोप लगाया है। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर स्पष्ट रूप से कहता है कि एक हत्यारे को तुरंत अपना जीवन खोना चाहिए। क्यों? क्योंकि जीवन अमूल्य है और अवैध और अन्यायपूर्ण तरीके से जीवन लेने का एकमात्र

प्रायश्चित्त अपराधी को मृत्युदंड देना है। हत्या के दोषी अपराधी को मृत्युदंड देना एक न्यायसंगत और आवश्यक हत्या है क्योंकि निर्दोष का खून देश को अपवित्र करता है, और देश को उसकी अपवित्रता से शुद्ध करने का एकमात्र तरीका हत्यारे के खून से किया जाने वाला प्रायश्चित्त है। यह एक तोरह सिद्धांत है जिसे हमारी बाइबिल में स्पष्ट रूप से बताया गया है, लेकिन हाल ही में इसे एक प्राचीन अंधविश्वास, या बर्बर और कुछ ऐसा माना जाने लगा है जिसे यीशु ने पलट दिया। इसके अलावा बाइबिल का दृष्टिकोण यह है कि अपराधी का जीवन लेना (उच्च स्तर से) जीवन का संरक्षण है। यानी एक व्यक्ति जो हत्या करता है वह फिर से ऐसा करने के लिए उत्तरदायी है, और अपराधी ने जो किया है उसकी कीमत अगले निर्दोष शिकार को क्यों चुकानी चाहिए? या जैसा कि हम आज देखते हैं, हमें एक हत्यारे को प्रति वर्ष 50,000 डॉलर की कीमत पर क्यों रखना चाहिए ताकि वह जेल प्रहरियों या साथी कैदियों पर हमला कर सके? दुःख की बात है कि जैसे-जैसे हमारा अमेरिकी समाज हिंसक अपराध के लिए ईश्वर द्वारा निर्धारित न्यायोचित दण्ड को नकारता जा रहा है, हम देखते हैं कि अपराधी को समाज में वापस लाया जा रहा है, तथा वह तुरन्त ही कोई दूसरा शिकार ढूँढ लेता है, क्योंकि हिंसा उसका स्वभाव है।

चर्च कृपया मेरी बात सुनें: किसी हत्यारे को मृत्युदंड न दिए जाने को उचित ठहराने का हमारे पास केवल एक ही तरीका है और वह है यह निर्णय लेना कि हम ईश्वर के वचन के विरुद्ध हैं और हमने ऐसा यह कहकर किया है कि बाइबिल का वह भाग, तोरह, जो इन मामलों से इतनी स्पष्टता से निपटता है, समाप्त कर दिया गया है, कि यह अब लागू नहीं होता।

मैं सीधे तौर पर कहना चाहता हूँ कि अगर हम यह मान भी लें कि तोरह मर चुका है और चला गया है, तो 10 आज्ञाएँ भी मर चुकी हैं और चली गई हैं क्योंकि वे तोरह के 613 नियमों में से सिर्फ पहले 10 हैं। फिर भी, हम में से बहुत से विश्वासी लोग पाखंडी तरीके से यह घोषणा करेंगे कि पुराना नियम हमारे लिए नहीं है और फिर भी हममें से कितने लोग ऐसे चर्च में जाएँगे जहाँ उन 10 आज्ञाओं की एक प्रति उनके पवित्र स्थान के भीतर किसी प्रमुख स्थान पर लटकी हुई न हो? अगर कोई चर्च वास्तव में वही मानता है जो वे कानून के बारे में कहते हैं, तो कितने उपदेशों को त्यागना पड़ेगा क्योंकि वे 10 आज्ञाओं की अचूकता का उल्लेख करते हैं।

क्या आज्ञाएँ, जो कि निर्गमन में दी गई व्यवस्था के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं?

हम विश्वासी इन मामलों में बहुत उलझन में हैं क्योंकि हमने माँग की है कि पुराने नियम को अमान्य माना जाए, भले ही यीशु ने खुद हमें यह बताने के लिए अपनी सीमा से बाहर जाकर कहा कि हमें कभी भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए और अगर हम जानना चाहते हैं कि क्या **कभी**

ऐसा समय आएगा जब तोरह और कानून और पैगंबर खत्म हो जाएँगे, तो यह तब तक नहीं होगा जब तक कि आकाश और पृथ्वी खत्म नहीं हो जाते।

मैं बहुत लंबा रास्ता नहीं तय करना चाहता, लेकिन एक स्थानीय पादरी ने मुझसे कहा (कुछ समय पहले) कि जब यीशु ने व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के बारे में ये शब्द कहे थे, तो उस समय वे केवल यहूदी लोगों से बात कर रहे थे, और इसलिए यह केवल यहूदी लोगों पर लागू होता है। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें ठीक से पता है कि वे शब्द किस अंश में कहे गए थे। उन्होंने कहा कि उनके दिमाग से नहीं। फिर मैंने उनसे पूछा कि उन्हें क्या लगता है कि यीशु ने चर्च को सबसे महत्वपूर्ण संदेश क्या दिया, उन्होंने कहा कि यह संभवतः पर्वत पर उपदेश था (जिससे, वैसे, मैं पूरी तरह सहमत हूँ)। खैर उनके आश्चर्य के लिए (और शायद आपके लिए भी) यीशु के वे शब्द जो व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की वैधता को दृढ़तापूर्वक और स्पष्ट रूप से बनाए रखते हैं, मत्ती 5:17–20 में थे, पर्वत पर उपदेश के बीच में। हम बाइबल के उन हिस्सों को फेंक देते हैं जिनसे हम सहमत नहीं हैं, जो हमारे अपने जोखिम पर हैं। हमने न्याय प्रणाली के बारे में परमेश्वर के नियमों को फेंक दिया है, और अब हम अराजकता में एक दुनिया है और एक बुरी तरह से धोखा खाने वाला चर्च जो परमेश्वर की वास्तविक छवि के बजाय उसकी अपनी छवि को प्राथमिकता देता है, आम तौर पर इसके लिए दोषी है और यही कारण है कि तोरह क्लास और दुनिया भर में कई अन्य मण्डली हमारे मार्गदर्शक और परमेश्वर की सामान्य इच्छा के लिखित स्रोत के रूप में संपूर्ण बाइबल की पवित्रता और अधिकार को बहाल करने की उम्मीद में बनाई गई हैं।

पद 19 में प्रभु कहते हैं कि वह व्यक्ति जो हत्यारे के लिए जल्लाद होगा, खून का बदला लेने वाला है। इब्रानी शब्द है **गाल (या गोएल)**, या बेहतर, दम **गाल**। दम का अर्थ है खून और हालाँकि **गाल** शब्द का आमतौर पर "बदला लेने वाले" के रूप में अनुवाद किया जाता है, लेकिन इसका अधिक सही अर्थ है "उद्धारकर्ता"। इसलिए यह खून छुड़ाने वाला या खून का बदला लेने वाला है, जिसे हत्यारे को मारने के लिए नियुक्त किया जाता है।

इब्रानी शब्द गाल में निहित है कि यह व्यक्ति एक रिश्तेदार है, पीड़ित के निकटतम परिवार या गोत्र का सदस्य है और यह **दम गाल** है जिसे अपराधी पर कार्रवाई करनी है। आइए समझते हैं: यह कोई परंपरा नहीं है यह परमेश्वर का कानून है। अब, मैं नहीं चाहता कि कोई भी यहाँ से यह कहे कि टॉम ब्रेडफोर्ड कहते हैं कि हमें, अमेरिका में, किसी ऐसे व्यक्ति पर व्यक्तिगत न्याय करना चाहिए जिसने परिवार के सदस्य के साथ हिंसक अपराध किया हो या अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर के कानून का उल्लंघन कर रहे हैं। बल्कि इस कानून के पीछे सिद्धांत

यह है कि सच्चा न्याय एक जीवन के बदले एक जीवन है; विशेष रूप से जब लिया गया जीवन जानबूझकर और अन्यायपूर्ण तरीके से लिया गया हो। एक बार जब इस्राएल में राजा होने लगे, तो हम पाएँगे कि उन राजाओं ने हमेशा उस अपराधी के पीछे जाने वाले **दम गाल** की प्रथा को रोकने की कोशिश की जिसने उसके परिवार के सदस्य को नुकसान पहुँचाया था और ऐसा इसलिए था क्योंकि एक सुव्यवस्थित मानव सरकार वाले संरचित और व्यवस्थित समाज में यदि हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अपराध या निर्दोषता का निर्धारण स्वयं करने लगे, तथा फिर वह स्वयं ही दण्ड देने का प्रयास करने लगे, तो अराजकता उत्पन्न हो जाएगी।

लेकिन यह भी समझें : सिद्धांत बना हुआ है। मनुष्य के पापी स्वभाव और हमारी अपूर्ण न्याय व्यवस्थाओं के कारण, इसका मतलब यह नहीं है कि रक्त का बदला लेने वाले की ईश्वरीय अवधारणा मर चुकी है और चली गई है। वास्तव में, रक्त का बदला लेने वाला होना, स्वजन उद्धारक के प्राथमिक कर्तव्यों में से एक है। क्या आपने यह सुना? ठीक वैसे ही जैसे हम विश्वासी उन अवांछित लोगों को त्याग देते हैं।

ईश्वर की विशेषताओं जैसे कि उसकी गंभीरता और उसके पक्ष में उसका क्रोध या उसकी दया और प्रेम, हम किन्समैन रिडीमर को एक बहुत ही अद्भुत दयालु व्यक्ति के रूप में भी चित्रित करते हैं, जिसका काम एक अमीर चाचा के रूप में है जो अपने गरीब रिश्तेदारों को बैंक से बचाता है जो उनकी जमीन पर कब्जा करने आ रहा है। निश्चित रूप से किन्समैन रिडीमर का एक कार्य यह सुनिश्चित करना है कि जो भूमि मूल रूप से उसके गोत्र में थी, वह कभी भी उससे बाहर न जाए, या यदि किसी परिवार के सदस्य को व्यक्तिगत ऋण का भुगतान करने के लिए गुलाम बनाया जाता है, तो उस व्यक्ति को उस गुलामी से वापस खरीदा जाएगा। लेकिन एक और समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका खून का बदला लेने वाले की है।

क्या यीशु मसीह को हमारा स्वजन उद्धारक नहीं कहा जाता? तो फिर समझिए वह उस उपाधि के दोनों पहलुओं को धारण करता है, न कि केवल वह जिसे हम पसंद करते हैं। जब वह पहली बार आया था तो वह स्वजन उद्धारक के उस पहलू के रूप में था जो निस्वार्थ भाव से किसी व्यक्ति के जीवन को गुलामी से वापस खरीदता है। और उसने हमारे जीवन को केवल उसी तरीके से वापस खरीदा जिसे परमेश्वर स्थायी समाधान के रूप में देखता है। अपने स्वयं के जीवन और अपने स्वयं के रक्त के साथ। जब यीशु निकट भविष्य में फिर से आएगा, तो वह भी स्वजन उद्धारक के रूप में ही आएगा, लेकिन इस बार वह **दम गाल**, रक्त का बदला लेने वाले की भूमिका में आएगा। उसने पहले ही परमेश्वर के लोगों की आत्माओं को खरीद लिया है, और ऐसा उसने

लगभग 2000 साल पहले किया था, अगली बार वह उन लोगों पर परमेश्वर का क्रोध निकालेगा जो उसके लोगों को सताते हैं और पिता के अधीन होने से इनकार करते हैं और हम इसे सबसे स्पष्ट रूप से देखते हैं, जब वह आर्मागैडन की लड़ाई में नेतृत्व करने वाला एक भयंकर योद्धा बन जाता है, जो पहले सौम्य और विनम्र मसीहा था, हर बार जब वह अपनी तलवार घुमाता है तो हज़ारों लोगों की जान ले लेता है। वह उन लोगों के खून से यिजेल घाटी को 3 फीट गहरा भर देता है जिनके खिलाफ वह प्रभु के न्याय की माँग कर रहा है।

फिर भी यह किस तरह का न्याय होगा यदि पीड़ित की जान गलती से चली गई हो, भले ही इसमें थोड़ी सी लापरवाही शामिल हो, और अपराधी को इसके लिए खोज कर मार दिया जाए? इसलिए पद 22 में आकस्मिक हत्या के उदाहरण के रूप में परिस्थितियों दी गई हैं, जैसे कि किसी व्यक्ति का क्रोधित होना और किसी को धक्का देना, लेकिन उसे मारने के इरादे के बिना। या शायद किसी व्यक्ति ने पीड़ित पर कुछ फेंका, लेकिन उस व्यक्ति को गंभीर रूप से घायल करने के इरादे से नहीं और निश्चित रूप से मारने का इरादा नहीं था। फिर बशर्ते कि एक परिषद यह निर्णय ले कि कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं था, अपराधी को खून का बदला लेने वाले से सुरक्षित आश्रय दिया जाना चाहिए। इस तरह की हत्या को हम आधुनिक लोग लापरवाह हत्या या नरहत्या कह सकते हैं।

अगर अनजाने में हत्या करना परिषद का निर्णय है तो अपराधी को 6 लेवी के पवित्र नगरों में से एक में ले जाया जाना चाहिए, जहाँ खून का बदला लेने वाला उसका पीछा नहीं कर सकता। हालाँकि यह अपराधी को उस पीड़ित की मौत के लिए उसकी ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं करता है। और इससे भी ज्यादा यह उस व्यक्ति को मारने के लिए **दम गाल** के कर्तव्य से मुक्त नहीं करता है, यह सिर्फ इतना है कि एक जगह है जो खून का बदला लेने वाले के लिए प्रतिबंधित है। इसलिए जैसा कि पद 26 में कहा गया है, अगर हत्या का अपराधी पवित्र नगर की सीमा के अंदर सुरक्षित रहता है तो वह सुरक्षित है। लेकिन अगर वह शरण नगर की शहर की सीमा से बाहर निकलता है तो वह निष्पक्ष शिकार बन जाता है और अगर खून का बदला लेने वाला उसे पवित्र नगर की शहर की सीमा के बाहर मार देता है तो यह न्याय है।

फिर पद 28 में यह दिलचस्प टिप्पणी है जो इस पूरी प्रक्रिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण चेतावनी जोड़ती है; हत्या का अपराधी अपने खून के अपराध में बना रहता है, चाहे यह सब कितना भी आकस्मिक क्यों न रहा हो और इसलिए उसे पवित्र नगर में निर्वासित कर दिया जाता है जब तक कि महायाजक मर न जाए। जब वर्तमान महायाजक मर जाता है (चाहे वह अपराधी के

सुरक्षात्मक शरण में भेजे जाने के एक दिन या 50 साल बाद हो) तो खून का अपराध हटा दिया जाता है और उसे माफ कर दिया जाता है, अब **दम गाल** को किसी भी परिस्थिति में उस व्यक्ति की जान लेने की अनुमति नहीं है, और अपराधी न केवल **दम गाल** के डर से मुक्त होकर घर लौट सकता है बल्कि परमेश्वर के न्याय में भी उसके रक्त अपराध से निर्दोष साबित हो सकता है।

यह कितनी अजीब बात है। यहाँ क्या हुआ? यह है: एक हत्यारा अपने अपराध के लिए प्रभु के समक्ष प्रायश्चित्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि महायाजक अपने जीवन से इसका भुगतान करे। महायाजक की मृत्यु (एक प्राकृतिक मृत्यु की कल्पना की जाती है) हत्या करने वाले के लिए ईश्वर द्वारा स्वीकृत प्रायश्चित्त बन जाती है।

लेकिन इससे अंततः एक समस्या पैदा हो गई क्योंकि एक हत्यारे को यह समझने में ज्यादा समय नहीं लगा कि एक उच्च पुजारी को जल्द से जल्द मरना कितना बड़ा फायदा है! उच्च पुजारियों की माताओं ने निर्वासन में अपराधियों के लिए भोजन और उपहार लाना शुरू कर दिया ताकि वे अपने आश्रय में इतने संतुष्ट रहें कि वे इतने अधीर न हो जाएँ कि वे वास्तव में उच्च पुजारी की मृत्यु के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दें ताकि वे अपने परिवारों में वापस लौट सकें और अपना सामान्य जीवन फिर से शुरू कर सकें। वास्तव में मिशनाह में इस चिंता का रिकॉर्ड है।

पद 30 में कहा गया है कि किसी व्यक्ति को हत्यारा तभी घोषित किया जा सकता है जब उसके कृत्य के पर्याप्त गवाह हों। सुनी सुनाई बातें या केवल एक उपलब्ध गवाह पर्याप्त नहीं है, क्योंकि मामला बहुत गंभीर है।

अब मामले का सार, पद 33 में बताया गया है (हालाँकि मैंने पहले इस पर बात की थी) जीवन की हानि से संबंधित इस सारी जटिलता के पीछे एक आध्यात्मिक कारण है। परमेश्वर की भूमि पर बहाया गया रक्त उस भूमि को प्रदूषित और अपवित्र करता है और निश्चित रूप से जो रक्त बहाया जा रहा है, उसे अन्यायपूर्ण रूप से बहाया गया रक्त माना जाता है। इसके अलावा, हर मृत्यु प्रदूषित और अपवित्र करती है और इसलिए बहाए गए रक्त और मृत्यु की अशुद्धता भूमि पर जमा होती जाती है (जिससे भूमि की धार्मिक अशुद्धता और भी बढ़ती जाती है) और अंतर्निहित समझ यह है कि परमेश्वर, अपनी पवित्रता में, ऐसी पूरी तरह से अपवित्र भूमि पर निवास नहीं कर सकते और परमेश्वर अपने पूरे अस्तित्व के साथ अपने लोगों के साथ रहने की इच्छा रखते हैं, इतना कि उन्होंने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो लोग उस वास्तविकता पर भरोसा करेंगे

वे अनंत काल तक परमेश्वर के साथ रहेंगे। मानव जाति के लिए उनकी योजना का यही पूरा उद्देश्य है।

आइये अध्याय 36 पर चलते हैं।

### गिनती अध्याय 36 पूरा पढ़ें

गिनती के पिछले अध्याय में मूसा ने आदेश दिया था कि ज़ेलोफाद की बेटियाँ अपने पिता की ज़मीन का हिस्सा विरासत में ले सकती हैं क्योंकि वह बिना किसी बेटे के मर गया था। लेकिन इससे तबाही की संभावना है अगर उसकी कोई बेटी इस्राएल से बाहर किसी से शादी कर ले तो क्या होगा?

चूँकि पत्नी को जो भी विरासत में मिलता है, उसका मालिक पति ही होता है, इसलिए (सैद्धांतिक रूप से) वह जमीन हमेशा के लिए विदेशियों के हाथों में चली जाएगी।

लेकिन अध्याय 36 में जिस समस्या को संबोधित किया गया है, वह वैश्विक नहीं है, जिस चिंता को संबोधित किया गया है, वह इस बारे में कम है कि अगर कनान में ज़मीन रखने वाली एक इब्रानी बेटी इस्राएल के बाहर शादी करती है तो क्या होगा, बल्कि इस बारे में है कि अगर वही लड़की अपने इस्राएली गोत्र से बाहर शादी करती है तो क्या होगा। यानी, उदाहरण के लिए शिमोन के गोत्र की एक लड़की गाद के गोत्र के आदमी से शादी कर सकती है। तब ऐसी स्थिति होगी कि परमेश्वर द्वारा सौंपे गए क्षेत्रीय आवंटन को अन्य इस्राएली कबीलों में विभाजित किया जा सकता है, जिससे क्षेत्रीय आवंटन में निष्पक्षता और संतुलन, साथ ही परमेश्वर की इच्छा, दोनों ही परेशान हो सकती है।

इसलिए यहाँ पद 6 में मूसा के माध्यम से परमेश्वर का निर्णय है कि ऐसी स्थिति में भूमि अधिकार वाली महिला अपनी पसंद के किसी भी व्यक्ति से विवाह कर सकती है, बशर्ते वह उसके अपने गोत्र में हो। ध्यान दें कि यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द स्पष्ट रूप से कबीला है, न कि गोत्र। उन्हें न केवल अपने गोत्र में बल्कि अपने विस्तारित परिवार में भी विवाह करना था, और यदि वे ऐसा नहीं करते तो उन्हें अपनी भूमि विरासत से वंचित कर दिया जाता।

और इस प्रकार जैसा कि इस अध्याय के अंत में स्पष्ट है, ज़ेलोफाद की बेटियों ने यहोवा के आदेश का पालन करते हुए अपनी चचेरी बहनों से विवाह किया।

यह स्पष्ट है कि (जैसा कि कोई उम्मीद कर सकता है) परिवार की वह इकाई जिसकी इस्राएल के लोगों को सबसे अधिक परवाह थी, वह उनका पूरा कबीला नहीं था, बल्कि उनका

निकटतम कबीला था और इसलिए कि एक गोत्र के भीतर एक प्रमुख कबीला बहुत अधिक शक्ति न ले (जो प्राचीन समय में भूमि और पशुधन के माध्यम से व्यक्त की जाती थी) परमेश्वर आदेश देता है कि उत्तराधिकार के अधिकार वाली बेटियों को अपने ही विस्तारित परिवारों में विवाह करना चाहिए।

कनान के भीतर भूमि के उपयोग और हस्तांतरण के संबंध में हमें मिलने वाले निर्देशों में से यह अंतिम नहीं है, व्यवस्थाविवरण में इस विषय पर उदाहरणों के माध्यम से स्थापित कई और निर्देश हैं।

आज हम इतने शहरी हो गए हैं कि हम भूमि के महत्व को भूल जाते हैं। लेकिन, परमेश्वर के लिए भूमि महत्वपूर्ण है, और वादा किया गया देश उसकी समग्र योजना का एक प्रमुख घटक है और, वह भूमि जिसे बाइबल कनान कहती है, विशेष रूप से इस्राएल के लिए अलग रखी गई है; हमेशा से रही है, हमेशा रहेगी। तोरह में प्रभु यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत प्रयास करेंगे कि भूमि उनके लोगों के कब्जे से कभी न निकले, लेकिन फिर भी ऐसा हुआ। इसके कई कारण थे, लेकिन मुख्य रूप से यह इस्राएल का प्रभु के विरुद्ध धर्मत्याग था। जिस क्षण से भूमि इस्राएल को सौंपी गई, वे भूमि के संबंध में परमेश्वर के अध्यादेशों के साथ खिलवाड़ करने लगे, और इसके परिणाम आज भी हर शाम हमारे टी.वी. सेट पर दिखाई देते हैं।

और, यह आश्चर्यजनक है, है न, कि अमेरिका और इस्राएल दोनों के सभी हालिया सरकारी प्रशासन भूमि के संबंध में परमेश्वर के नियमों के प्रति इतने अंधे हैं कि इस्राएल के खिलाफ हिंसा की समस्या का उनका समाधान यह है कि इसे उन लोगों के वंशजों को देना जारी रखा जाए जिनसे इसे लेने का आदेश परमेश्वर ने दिया था।

जैसे-जैसे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में तोरह का अध्ययन जारी रखते हैं, इस निर्णय की मूर्खता स्पष्ट होती जानी चाहिए। अगले सप्ताह, हम तोरह के अंतिम अध्याय, व्यवस्थाविवरण की शुरुआत करेंगे।